चंदन सा बदन, चंचल चितवन . . .

डा विजय सुखवानी
लेखक, मोटिवेशनल स्पीकर
v1sukhwani@gmail.com

हिंदी फिल्मों के इतिहास में जिन गीतकारों ने अपने शब्दों और भावनाओं से फ़िल्मी गीतों को अमरत्व प्रदान किया, उनमें गीतकार 'श्यामलाल बाबू राय' का नाम बहुत आदर के साथ लिया जाता है. मुमकिन है कि आप इस नाम से वाकिफ न हों, मगर यदि मैं कहूँ कि मैं महान गीतकार इंदीवर की बात कर रहा हूं तो यक़ीनन क़ोई भी सिने प्रेमी ऐसा नहीं होगा जो इस नाम से परिचित न हो और उनका प्रशंसक न हो. इंदीवर उन गीतकारों में थे,जिन्हें सरल शब्दों में गहरी से गहरी बात कहने में बड़ी महारत हासिल थी, उन्होंने कई ऐसे यादगार गीत लिखे, जो सिर्फ फिल्मों का हिस्सा न रहकर हमारे जीवन का अटूट हिस्सा बन गए. उनके गीत इंसानी जज़्बातों की सच्ची अभिव्यक्ति हैं .

फिल्मों में आने से पहले 1942 में इन्दीवर ने अंग्रेज़ी सरकार को ललकारते हुए गीत लिखा था, 'कर दे मकान खाली, अरे किरायेदार कर दे मकान खाली' जिसके लिए अंग्रेज़ हुकूमत ने उन्हें एक साल की जेल की सजा भी दी थी, वो आजादी के आंदोलन के ऐसे दीवाने थे कि अपने दाएं हाथ पर 'आज़ाद' शब्द गुदवा लिया था .

इंदीवर जिस समय फिल्मों में गीत लिखने के लिये मुंबई पहुँचे, कई महान गीतकार उस समय इंडस्ट्री में मौजूद थे, उनके सामने अपनी जगह बनाना बड़ा कठिन कार्य था और यह संघर्ष केवल आजीविका का न होकर , अपनी रचनात्मक पहचान स्थापित करने का भी था.

वर्ष 1951 में पहली बार उन्हें 'बड़े अरमानो से रखा है बलम तेरी कसम '(मल्हार) गीत से प्रसिद्धि मिली और उसके बाद उन्होंने पीछे मुड़कर नहीं देखा और पायदान-दर-पायदान बुलंदियां छूते गए. आगे चलकर साठ, सत्तर और अस्सी के दशकों में तो वे फिल्म उद्योग के सबसे लोकप्रिय और प्रमुख गीतकारों में शामिल हो गये द्य इंदीवर के गीतों की लोकप्रियता का सबसे बड़ा कारण उनकी सरलता और भावात्मक गहराई थी. यही कारण है कि उनके गीत सुनने वालों के मन में तुरंत उतर जाते थे. उनका मानना था कि गीत तभी प्रभावशाली बनता है, जब वह श्रोता की भाषा में उससे संवाद करे. इसलिए उन्होंने सरल भाषा का प्रयोग किया. उनके गीतों में जो सहजता है उसमें एक गहरी अनुभूति छिपी रहती है. इंदीवर केवल प्रेम-गीतों तक सीमित नहीं थे,उन्होंने दार्शनिक चिंतन, इंसानी रिश्तों, सामाजिक भावनाओं और प्रेरणादायक स्थितियों के लिये 300 से ज्यादा फिल्मों में एक हज़ार से ज्यादा यादगार गीत लिखे.

इंदीवर ने फिल्म-जगत के अनेक प्रसिद्ध संगीतकारों के साथ काम किया, परंतु उनकी सबसे सफल जोड़ी कल्याणजी-आनंदजी के साथ मानी जाती है. इस जोड़ी ने हिंदी सिनेमा को कई महान गीत दिए. इंदीवर के शब्दों और कल्याणजी-आनंदजी के संगीत का बेज़ोड संगम खूब लोकप्रिय हुआ. इस जोड़ी के अमर गीतों में 'हम ने तुझको प्यार किया', 'जो प्यार तू ने मुझको दिया था '(दूल्हा दुल्हन), 'वक़्त करता जो वफ़ा' (दिल ने पुकारा), 'ज़िंदगी का सफर है ये कैसा सफर', 'जीवन से भरी तेरी आँखें मजबूर करें ', 'नदिया चले चले रे धारा '(सफ़र), 'चंदन सा बदन चंचल चितवन', 'फूल तुम्हें भेजा है ख़त में', 'मैं तो भूल चली बाबुल का देश ', 'छोड़ दे सारी दुनिया किसी के लिए' (सरस्वतीचंद्र), 'मेरे देश की धरती सोना उगले' (उपकार), 'कोई जब तुम्हारा ह्रदय तोड़ दे ', 'है प्रीत

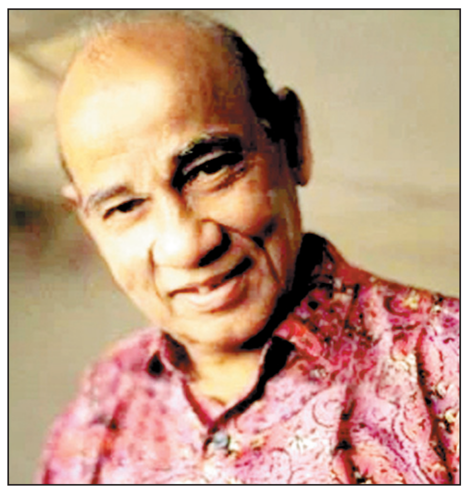

जहाँ की रीत सदा' (पूरब और पश्चिम), 'तेरे चेहरे में वो जादू है '(धर्मात्मा), 'जिस पथ पे चला उस पथ पे मुझे' (यादगार), 'दरपन को देखा तू ने '(उपासना), 'यू हीं तुम मुझसे बात करती हो ', 'मेरी प्यारी बहनिया बनेगी दुल्हनिया ', 'दिल सच्चा और चेहरा झूठा '(सच्चा झूठा), 'हम छोड़ चले हैं महफ़िल को '(जी चाहता है), 'समझौता ग़मों से कर लो' (समझौता), ' 'पल भर के लिए कोई हमें प्यार कर ले ', 'नफरत करने वालों के सीने में '(जानी मेरा नाम), 'नीले नीले अम्बर पे' (कलाकार), 'हर किसी को नहीं मिलता यहाँ प्यार ज़िन्दगी में ', 'प्यार दो प्यार लो' (जांबाज़) और 'आप जैसा कोई मेरी ज़िन्दगी '(कुर्बानी) जैसे गीत शामिल हैं.

इसके अतिरिक्त उन्होंने रोशन, लक्ष्मीकांत-प्यारेलाल, बप्पी लाहिड़ी,राजेश रोशन, उषा खन्ना आदि संगीतकारों के साथ भी शानदार काम किया. वे परिस्थितियों, पात्रों और धुन के अनुसार अपने शब्दों को ढाल लेते थे,दक्षिण के कई फ़िल्म निर्माताओं के वे पसंदीदा गीतकार रहे , दक्षिण के निर्माताओं की सुपर हिट फिल्मों, तोहफा, मवाली, हिम्मत वाला, पाताल भैरवी, कलाकार, जस्टिस चौधरी आदि के गीत उन्होंने ही लिखे थे . फिल्मकार मनोज कुमार के साथ उन्होंने 'उपकार 'और 'पूरब और पश्चिम' जैसी क्लासिक फिल्मों के लिये यादगार गाने लिखे. इसी प्रकार फ़िरोज़ खान और राकेश रोशन निर्मित फिल्मों में वो स्थाई गीतकार थे, फ़िरोज़ खान की फिल्मों धर्मात्मा, कुर्बानी, जांबाज़ आदि और राकेश रोशन की कामचोर, खुदगर्ज, खून भरी मांग, काला बाजार, किशन कन्हैया, करण अर्जुन और कोयला

जैसी फ़िल्मों के सुपर हिट गीत उनकी ही लेखनी का ही कमाल हैं. उनके लिखे गीत आज भी उतने ही प्रसिद्ध हैं जितने अपने समय में थे. उनके कुछ और अविस्मरणीय गीत हैं— 'रोशन तुम्ही से दुनियाँ '(पारसमणि), 'पास बैठो तबियत' (पुनर्मिलन), 'वक़्त करता जो वफ़ा' (दिल ने पुकारा), 'दिल ऐसा किसी ने मेरा तोड़ा '(अमानुष), 'महलों का राजा मिला ', 'ताल मिले नदी के जल में' (अनोखी रात), 'रूप तेरा ऐसा दरपन में ना ', 'सवेरे का सूरज तुम्हारे लिये ', 'चेहरे से ज़रा आँचल जब आपने सरकाया' (एक बार मुस्कुरा दो), 'मधुबन खुशबू देता है '(साजन बिना सुहागन), 'होंठों से छू लो तुम' (प्रेमगीत), 'एक अँधेरा लाख सितारे '(आखिर क्यों), 'जब कोई बात बिगड़ जाये '(जुर्म), 'तुम मिले दिल खिले' (क्रिमिनल) आदि. इन गीतों का विषय और भाव अलग-अलग है, पर उनमें इंदीवर साहब की छाप स्पष्ट रूप से दिखाई देती है . उनके गीत जीवन की सच्चाइयों का काव्यात्मक बयान हैं.

इंदीवर साहब की सबसे बड़ी खासियत यह थी कि वे बदलते समय के साथ स्वयं को ढालना जानते थे. उन्होंने 1960 और 1970 के काव्यात्मक भावपूर्ण गीतों से लेकर 1980 के व्यावसायिक और आधुनिक फिल्म-संगीत तक हर दौर में सफल गीत लिखे. उन्होंने जहाँ एक ओर गहन भावनात्मक गीत लिखे, वहीं दूसरी ओर हल्के-फुल्के, चुलबुले और लोकप्रिय शैली के गीत भी लिखे. उनके इस गुण ने उन्हें लंबे समय तक फिल्म-जगत में सक्रिय और प्रासंगिक बनाए रखा और इस तरह उन्होंने ' 'बड़े अरमानो से रखा है बलम तेरी कसम' (मल्हार) से लेकर 'देखा तुझे तो ' (कोयला) तक का लम्बा सफ़र कामयाबी से तय किया, हालांकि अनेक कालजयी गीत लिखने वाले इंदीवर ने 80 के दशक में 'रंभा हो हो, मैं नाचूँ 'और 90 के दशक में 'तम्मा तम्मा' जैसे साधारण गीत भी लिखे .

यदि साहित्यिक दृष्टिकोण से देखा जाए, तो इंदीवर केवल सफल फिल्मी गीतकार नहीं, बल्कि एक बड़े कवि भी थे. उनके गीतों में रूपक, प्रतीक, लय और भाव-सौंदर्य का सुंदर संतुलन मिलता है. उनके गीतों में मानवीय संवेदना, प्रेम की कोमलता, विरह की पीड़ा और जीवन दर्शन एक साथ मिलते हैं . इंदीवर को हिंदी फिल्म उद्योग में उनके योगदान के लिए कई पुरस्कार मिले, 1975 में फिल्म 'अमानुष' के लिए उन्हें सर्वश्रेष्ठ गीतकार का फिल्मफेयर पुरस्कार मिला. इंदीवर का नाम उनके अमर गीतों के लिये हिंदी सिनेमा के इतिहास में सदैव आदर और श्रद्धा के साथ लिया जायेगा . आज के लिये इतना ही, अगले सप्ताह फिर मिलेंगे, तब तक इंदीवर साहब का 'आखिर क्यों' फ़िल्म का ये बेहद मोटिवेशनल गीत सुनिए और हमेशा मोटिवेटेड रहिये,

एक अंधेरा लाख सितारे , एक निराशा लाख सहारे
सबसे बड़ी सौगात है जीवन, नादां हैं जो जीवन से हारे.

रोमांटिक अंदाज में दिखे सलमान खान

बॉलीवुड स्टार सलमान खान की आने वाली फिल्म मातृभूमि: मे वार रेस्ट इन पीस' का गाना 'चांद देख लेना' गाना रिलीज़ हो गया है. सलमान खान फिल्म्स ने 'मातृभूमि: मे वार रेस्ट इन पीस' से सलमान खान और चित्रांगदा सिंह पर फिल्माया गया पूरा गाना 'चांद देख लेना' रिलीज कर दिया है. यह गाना चांद के इमोशनल महत्व को बहुत खूबसूरती से दिखाता है, जो ईद और करवा चौथ दोनों का ही एक बड़ा हिस्सा है. जहाँ ईद पर चांद का दिखना जश्न और मिलन का प्रतीक है, वहीं करवा चौथ पर यह प्यार, इंतज़ार और भरोसे को दिखाता है. 'चांद देख लेना' इन दोनों परंपराओं को भावनाओं और उम्मीद के जरिए एक साथ पिरोता है.

फिल्म के टाइटल ट्रैक 'मातृभूमि' को लोगों ने खूब पसंद किया और इसे 50 मिलियन से ज्यादा व्यूज मिले. फिर वेलेंटाइन डे पर 'मैं हूँ' गाना आया और अब इस नए गाने 'चांद देख लेना' ने फिल्म की कहानी और इसके म्यूज़िक को लेकर फैंस का उत्साह और भी बढ़ा दिया है.

हिमेश रेशमिया के संगीत से सजा यह गाना बॉलीवुड के पुराने और सच्चे प्यार की याद दिलाता है. यह गाना एक सैनिक की ड्यूटी और उसके रिश्तों के बीच के इमोशनल सफर को बहुत ही खूबसूरती से दिखाता है. वीडियो में चित्रांगदा सिंह का किरदार एक फौजी की पत्नी की हिम्मत और सब्र को दिखाता है, जो सरहद पर तैनात अपने पति (सलमान खान) का घर लौटने का इंतज़ार करती हैं. यह गाना उन परिवारों की ताकत को सलाम करता है जो देश की रक्षा करने वालों के पीछे चट्टान बनकर खड़े रहते हैं.

संगीत की दुनिया में कुछ नया करने के लिए, सलमान खान ने इस गाने के जरिए नए टैलेंट को मौका दिया है. 'चांद देख लेना' को युवा गायक निहाल टौरो, जो अपने आध्यात्मिक भजनों और कीर्तनों के लिए मशहूर हैं, और अंकोना मुखर्जी ने गाया है. सलमान खान ने अपनी परंपरा को बरकरार रखते हुए इन दोनों गायकों को मेनस्ट्रीम सिनेमा में एक बड़ा ब्रेक दिया है. पहले इस फिल्म का नाम 'बैटल ऑफ गलवान' था, लेकिन अब इसे बदलकर 'मातृभूमि: मे वार रेस्ट इन पीस' कर दिया गया है.

'सरके चुनर' गाने पर बड़ा बैन
विवाद बढ़ा, सभी भाषाओं से हटाया गया

सरके चुनरगाने को लेकर उठे विवाद ने अब एक बड़े मुद्दे का रूप ले लिया है, जहां कला, अभिव्यक्ति और सामाजिक संवेदनशीलता के बीच टकराव साफ तौर पर नजर आ रहा है. कन्नड़ फिल्म 'केडी: द डेविल' का यह गाना रिलीज होते ही चर्चा में आ गया था, लेकिन इसकी लोकप्रियता से ज्यादा इसके बोलों को लेकर विरोध ने सुर्खियां बटोरीं.

सोशल मीडिया पर यूजर्स ने गाने के कुछ हिस्सों पर आपत्ति जताई और इसे आपत्तिजनक बताया. देखते ही देखते यह विरोध इतना बढ़ गया कि फिल्म से जुड़े निर्माताओं और कलाकारों को इस पर प्रतिक्रिया देनी पड़ी. इसी बीच सिंगर मंगली ने सामने आकर माफी मांगते हुए कहा कि उनका इरादा किसी की भावनाओं को ठेस पहुंचाने का नहीं था. उन्होंने साफ किया कि यह गलती अनजाने में हुई और इसके लिए वह दिल से क्षमा चाहती हैं.

मंगली ने यह भी बताया कि गाने के विवादित हिस्सों को ठीक कर लिया गया है और जल्द ही इसका नया वर्जन जारी किया जाएगा. इसके साथ ही गाने को हिंदी, कन्नड़, तमिल, तेलुगु और मलयालम समेत सभी भाषाओं में प्लेटफॉर्म से हटा दिया गया है. यह कदम इस बात को दर्शाता है कि निर्माताओं ने जनता की भावनाओं को गंभीरता से लिया है.

वहीं, इस पूरे विवाद में नोरा फतेही का नाम भी जुड़ गया, क्योंकि गाने के वीडियो में उनकी तस्वीर का इस्तेमाल किया गया था. नोरा ने सोशल मीडिया पर अपनी प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि उन्हें इस हिंदी गाने के बारे में कोई जानकारी नहीं थी और उन्होंने इस पर परफॉर्म भी नहीं किया. उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि उनकी तस्वीर का उपयोग बिना अनुमति के किया गया, जो कि गलत है.

यह मामला सिर्फ एक गाने तक सीमित नहीं है, बल्कि यह इस बात का उदाहरण बन गया है कि आज के दौर में कंटेंट क्रिएटर्स को कितनी सावधानी बरतने की जरूरत है. दर्शकों की भावनाएं और सामाजिक संवेदनशीलता अब पहले से ज्यादा महत्वपूर्ण हो गई हैं, और किसी भी तरह की चूक तुरंत बड़े विवाद में बदल सकती है.

शनाया के रोल के लिए उत्साहित हूं : मुस्कान बामने

अभिनेत्री मुस्मान बामने का कहना है कि सोनी सब के शो पुष्पा इम्पॉसिबल में जब उन्हें शनाया का रोल ऑफर हुआ तो वह बहुत उत्साहित हुयी . सोनी सब का चर्चित शो पुष्पा इम्पॉसिबल अपनी दिल छू लेने वाली कहानी और दर्शकों से जुड़ने वाले किरदारों के साथ लगातार दर्शकों का दिल जीत रहा है . कहानी में नया मोड़ तब आता है, जब शनाया (मुस्कान बामने द्वारा निभाया गया किरदार) की एंट्री होती है . शनाया एक आत्मविश्वासी और बेबाक युवती है, जो साउथ मुंबई से आती है . उसका विशेषाधिकारों से भरा नजरिया जब पुष्पा की चाल वाली जिंदगी से टकराता है, तो शो में नए समीकरण और दिलचस्प पल सामने आते हैं . इस टकराव से पुष्पा (करुणा पांडे) की यात्रा और भी गहरी हो जाती है .

गंगा माई की बेटियां के शीजान स्टेज पर हुए इमोशनल

जी कुटुंब अवॉर्ड्स के मंच पर उस वक्त सपने, मेहनत और एक मां की अटूट हिम्मत का संगम देखने को मिला, जब गंगा माई की बेटियां में सिद्धू का किरदार निभा रहे शीज़ान खान को अपने करियर का पहला अवॉर्ड मिला . जो पल खुशी का था, वो अचानक बेहद खास और भावुक बन गया, जब जी कुटुंब टीम ने उनके लिए एक सरप्राइज प्लान किया . जैसे ही अवॉर्ड देने का समय आया, शीज़ान यह देखकर हैरान रह गए कि उनकी मां खुद स्टेज पर ट्रॉफी देने के लिए आ रही हैं . इस अनदेखे सरप्राइज़ ने उन्हें पूरी तरह चौंका दिया और कुछ पलों तक वो समझ ही नहीं पाए कि क्या हो रहा है . जैसे ही उन्हें एहसास हुआ कि उनकी जिंदगी का पहला अवॉर्ड उनकी मां के हाथों से मिलने वाला है, वो स्टेज पर ही भावुक हो गए . वो अपने जज़्बातों को संभाल नहीं पाए और उन्होंने बताया कि उस पल उनके दो सबसे बड़े सपने एक साथ पूरे हो गए, पहला अवॉर्ड मिलना और वो भी मां के हाथों से . बड़ी मुश्किल से अपने आंसुओं को थामते हुए शीज़ान ने कहा, यह मेरा पहला अवॉर्ड है . मैं अभी जो महसूस कर रहा हूं, उसे शब्दों में बयां करना मुश्किल है .

कलाकार निभा रहे हैं चैत्र नवरात्रि की परंपरा

चैत्र नवरात्रि, मां दुर्गा को समर्पित नौ दिनों का पावन पर्व, भक्ति, आत्मचिंतन और नई शुरुआत का प्रतीक है . इस दौरान श्रद्धालु व्रत रखते हैं, पूजा-अर्चना करते हैं और पारंपरिक रीति-रिवाजों का पालन करते हैं . एण्डटीवी के कलाकारों ने बताया कि व्यस्त शूटिंग शेड्यूल के बावजूद भी इस खास मौके पर अपनी आस्था और परंपराओं से कैसे जुड़े रहते हैं . इन कलाकारों में शामिल हैं- रोहिताश्व गौड़ (भाबीजी घर पर हैं के मनमोहन तिवारी) और सीरत कपूर (घरवाली पेड़वाली में सावी) . घरवाली पेड़वाली में सावी का किरदार निभा रहीं सीरत कपूर ने कहा, नवरात्रि मेरे लिए बेहद खास है क्योंकि यह भक्ति और आंतरिक शक्ति का प्रतीक है . लंबे शूटिंग घंटों के बावजूद मैंने इस साल कुछ दिन व्रत रखने का फैसला किया है . थोड़ी प्लानिंग के साथ यह आसानी से हो जाता है . मैं सुबह मां दुर्गा की पूजा से दिन की शुरुआत करती हूं और फिर सेट पर जाती हूं .

छत्रपति शिवाजी महाराज की झलक का इंतजार
'धुरंधर द रिवेंज' संग खास पेशकश

जियो स्टूडियोज और मुंबई फिल्म कंपनी अपनी महत्वाकांक्षी ऐतिहासिक फिल्म 'राजा शिवाजी' के दमदार फर्स्ट लुक टीजर की खास झलक सिर्फ बड़े पर्दे पर देखने को मिलेगी. इस बहुप्रतीक्षित फर्स्ट लुक को 'धुरंधर द रिवेंज' के साथ जोड़ा गया है.फिल्म 'राजा शिवाजी' की पहली झलक सिर्फ थिएटर में ही दिखाई जाएगी, जिससे दर्शकों को भारत के महान योद्धा छत्रपति शिवाजी महाराज के जीवन और उनकी विरासत की कहानी की पहली झलक मिलेगी. इस फिल्म का निर्देशन और मुख्य भूमिका रितेश विलासराव देशमुख ने निभाई है. 'राजा शिवाजी' एक ऐसे बेटे की कहानी है, जिसने एक पवित्र संकल्प लिया और बड़ी ताकतों के खिलाफ खड़े होकर स्वराज्य की नींव रखी.

फिल्म में संगीत अजय-अतुल ने दिया है और सिनेमैटोग्राफी संतोष सिवन ने की है. निर्माता इस ऐतिहासिक कहानी को एक भव्य सिनेमाई अनुभव के रूप में पेश करना चाहते हैं, जो भाषाओं की सीमाओं को पार करते हुए भारत की समृद्ध विरासत को दुनिया के सामने लाए. इस फिल्म को जियो स्टूडियोज प्रस्तुत कर रहा है और ज्योति देशपांडे और जिनिलीया देशमुख ने मुंबई फिल्म कंपनी के तहत इसे प्रोड्यूस किया है.

यामी गौतम का छोटा रोल, बड़ा धमाका

धुरंधर: द रिवेंज' ने रिलीज के साथ ही यह साबित कर दिया है कि आज का दर्शक सिर्फ कहानी नहीं, बल्कि एक्सपीरियंस देखने के लिए सिनेमाघरों तक आता है. रणवीर सिंह की दमदार मौजूदगी और आदित्य धर के निर्देशन ने फिल्म को एक अलग ही स्तर पर पहुंचा दिया है. फिल्म का हर सीन, हर फ्रेम और हर किरदार बड़ी बारीकी से गढ़ा गया है, जो इसे बाकी फिल्मों से अलग बनाता है.

फिल्म का सबसे बड़ा सरप्राइज बनकर सामने आई हैं यामी गौतम, जिनका कैमियो रिलीज से पहले ही चर्चा में था. माना जा रहा था कि वह फिल्म में डॉक्टर की भूमिका निभाएंगी और उनका किरदार किसी बड़े कनेक्शन से जुड़ा होगा. लेकिन फिल्म में उनकी एंट्री एक नर्स के रूप में होती है, जो दर्शकों के लिए पूरी तरह से अप्रत्याशित है.

शर्मिला टैगोर की उपलब्धियों को सम्मान

इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल ऑफ दिल्ली में दिग्गज अभिनेत्री शर्मिला टैगोर को सम्मानित किया जाएगा.

इस फिल्म फेस्टिवल में दर्शकों के लिए जहां एक से बढ़कर एक बेहतरीन फिल्में प्रदर्शित की जाएंगी वहीं दिग्गज कलाकारों को भी देखने, सुनने का मौका मिलेगा. 25 से 31 मार्च 2026 तक भारत मंडपम में आयोजित होने वाले इस फेस्टिवल दिल्ली में हिंदी सिनेमा में उत्कृष्ट योगदान के लिए दिग्गज अभिनेत्री शर्मिला टैगोर को सम्मानित किया जाएगा.

भारतीय सिनेमा की सबसे कालजयी पहचान मानी जाने वाली शर्मिला टैगोर को यह सम्मान उनके दशकों लंबे करियर और सिनेमा में उनके योगदान के लिए दिया जा रहा है. इस अवसर पर अपनी खुशी जाहिर करते हुए शर्मिला टैगोर ने कहा,

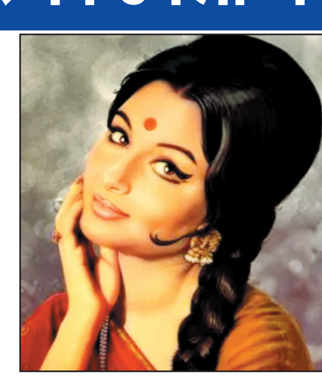

'फिल्म फेस्टिवल ऐसे महत्वपूर्ण स्थान हैं जहाँ दुनिया भर का सिनेमा संवाद के लिए एक साथ आता है. मैं इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल दिल्ली का हिस्सा बनकर खुश हूँ और इस सम्मान से बेहद अभिभूत हूँ. मैं फेस्टिवल में शामिल होने और उन विविध कहानियों और आवाजों का जश्न मनाने के लिए उत्सुक हूँ जो सिनेमा को खास बनाती हैं.'

गौरतलब है कि शर्मिला टैगोर ने हिंदी और बंगाली दोनों ही सिनेमा में शानदार काम किया है और ऐसी परफॉरमेंस दी हैं जो देश के फिल्मी इतिहास में यादगार हैं. अपनी शालीनता, बेहतरीन रेंज और स्क्रीन पर अपनी जबरदस्त उपस्थिति के लिए पहचानी जाने वाली टैगोर ने भारत के सबसे प्रसिद्ध फिल्मकारों के साथ काम किया है.

इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल ऑफ दिल्ली को जबरदस्त प्रतिक्रिया मिली है और 100 से अधिक देशों से कुल 2,187 प्रविष्टियाँ प्राप्त हुई हैं. इनमें 1,372 अंतरराष्ट्रीय और 815 भारतीय फीचर और नॉन-फीचर फिल्में शामिल हैं. भारत मंडपम के साथ-साथ शहर के विभिन्न मल्टीप्लेक्स और सार्वजनिक ओपन-एयर स्थानों पर भी फिल्मों की स्क्रीनिंग होगी, ताकि उच्च गुणवत्ता वाला सिनेमा एक बड़े और विविध दर्शकों तक पहुँच सके.